International Journal of Applied Research 2018; 4(3): 545-548

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(3): 545-548
www.allresearchjournal.com
Received: 15-01-2018
Accepted: 27-02-2018

Dr. Dhananjay Kumar
Lecturer, History, K.S.T
College Salempur, Bihar, India

Correspondence
Dr. Dhananjay Kumar
Lecturer, History, K.S.T
College Salempur, Bihar, India

भारतीय चिकित्सा क्षेत्र में आयुर्वेद के स्वरुप का ऐतिहासिक विश्लेषण

Dr. Dhananjay Kumar

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन में प्राचीन काल से प्रचलित भारतीय चिकित्सा पद्धति का पुनरावलोकन किया गया है जिसके अंतर्गत प्राचीन चिकित्सा तकनीक तथा चिकित्सा के प्रचार प्रसार संबंधित बिंदुओं पर अध्ययन किया गया है। पुरातत्वेताओं के अनुसार भारतीय चिकित्सा पद्धति विश्व की प्राचीनतम चिकित्सा पद्धतियों में से एक हैं अतः यह अध्ययन इस बात की समीक्षा करता है कि प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धतियां जिनका उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है लगभग 3000 से 40000 वर्ष पूर्व तक भी प्रचलन में आ चुकी थी।

मूल शब्द: आयुर्वेद, शल्य चिकित्सा, चरक संहिता, चिकित्सा पद्धति, काय चिकित्सा।

प्रस्तावना

अनादि काल से मनुष्य का यह प्रयत्न रहा है कि वह शारीरिक मानसिक तथा आध्यात्मिक कष्टों से बचा रहे इस प्रकार यह ज्ञात करना आसान हो जाता है कि चिकित्सा शास्त्र का इतिहास उतना ही प्राचीन है जितना की मानव का अस्तित्व। चिकित्सा के क्षेत्र में विश्व के अनेक भागों में समयसमय- पर अनेक पारंपरिक पद्धतियों का विकास हुआ और धीरे धीरे चिकित्सा पद्धतियों के रूप में परिवर्तित होती गई। जिनमें आयुर्वेदिक, यूनानी, सिद्ध, तिब्बती एवम् प्राकृतिक पद्धतियां आज भी भारत में प्रचलित हैं । 1 आयुर्वेद भारतीय चिकित्सा पद्धति की सबसे प्राचीनतम पद्धतियों में से एक मानी गई है जिसकी उत्पत्ति एवं उद्भव के संबंध में कई मत प्रचलित रहे हैं। आयुर्वेद को अथर्ववेद का उपवेद माना गया है अत अथर्ववेद में औषधियों संबंधी ज्ञान तथा उससे संबंधित रोगों का उपचार मुख्य है । 20 वी सदी में आयुर्वेद से संबधित ज्ञान में काफी महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए है जिसके अंतर्गत आयुर्वेद को भारतीय सरकार की नीतियों का हिस्सा बनाया जा चुका है । आयुर्वेद के विकास हेतु भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय का अहम योगदान रहा है ताकि आयुर्वेद की प्रसिद्धि को जगजाहिर किया जा सके । भारतीय चिकित्सा पद्धति का स्वरूप काफी व्यापक है इतिहासकारों ने इसे अपने अपने ढंग से प्रस्तुत किया है।

अध्ययन उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति के रूप में आयुर्वेद का विश्लेषण करना है जिसके अंतर्गत आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति के स्वरूप तथा इसके विभिन्न भागों का विश्लेषण करना सम्मिलित है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

आयुर्वेद के इतिहास के सम्बन्ध में पुरातत्वेताओ ने ऋग्वेद में इसकी उपस्थिति को वर्णित किया है अतः इसका विकास आधुनिक समय से लगभग 3000 से 50000 वर्ष पूर्व में हुआ है । प्राचीन भारतीय चिकित्सा आयुर्वेद के रूप में विश्व विख्यात है। आयुर्वेद में रोगो की उत्पति का कारण तीन दोषो के उत्पन्न होने से सम्बंधित है, यह दोष निम्न है वात, पित्त और कफ । आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति मुख्य रूप से औषधीय पेड़ पौधों अथवा जड़ी बूटियों पर निर्भर है व्यवहारिक रुप से इन जड़ी-बूटियों के प्रयोग द्वारा शरीर पर कोई भी दुष्प्रभाव नहीं दिखाई देते। भारत में प्राचीन चिकित्सा पद्धति के संबंध में कई मत प्रचलित हैं जिनमें से एक मत चरक मत से सम्बन्धित है जो निम्न है -

आत्रेय संप्रदाय के अनुसार

के अनुसार भगवान ब्रह्मा को प्रथम वैद्य के रूप में स्वीकार किया गया है। भगवान ब्रह्मा द्वारा आयुर्वेद के ज्ञान से परिपूर्ण आयुर्वेद शास्त्र का ज्ञान प्रजापति को बतलाया गया प्रजापति से यह ज्ञान अश्विनीकुमारों ने सीखा, अश्विनीकुमारों से इंद्र ने और इंद्र से आर्यों तक पहुंचा।

सुश्रुत मतानुसार

इस मत के अनुसार आयुर्वेद का प्रकाशन ब्रह्मदेव द्वारा संपादित माना गया है। इनके अनुसार आयुर्वेद को अथर्ववेद का उपवेद माना गया है। जिसमें 1000 अध्यायों तथा एक लाख श्लोकों को संग्रहित किया गया है। भगवान ब्रह्मा द्वारा इसे 8 अंगों में विभक्त कर दिया गया तत्पश्चात ब्रह्मा से दक्ष प्रजापति उनसे दोनों अश्विनी कुमारों उनसे इंद्र ने आयुर्वेद के ज्ञान को ग्रहण किया।

भगवान ब्रह्मा ने आयुर्वेद को 8 भागो में विभाजित किया जिन्हे तंत्र नाम गया। इन्ही तंत्रो में सम्पूर्ण आयुर्वेद पद्धति विद्यमान रही है। ।

1 शल्य तंत्र surgical techniques
2 शालाक्य तंत्र ENT
3 काय चिकित्सा general medicine
4 भूत विद्या तंत्र psycho therapy
5 अंगद तंत्र toxicology
6 रसायन तंत्र renjuvention and geriatrics
7 वाजीकरण virilification, science of aphordisiac and sexology
8 कुमारभृत्य paediatric

काय चिकित्सा

कायचिकित्सा चिकित्सा पद्धति का वह स्वरूप है जिसमें शारीरिक रोगों का उपचार उपकरणों से रहित औषधियों अथवा दवाइयों से किया जाता है । प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति के अनुसार कायचिकित्सा का वर्णन चरक संहिता में मिलता है। जिसे चरक द्वारा लिखा गया। भारतीय चिकित्सा शास्त्र के पितामह के रूप में प्रसिद्ध चरक, द्वारा चरक संहिता को औषधी शास्त्र में आयुर्वेद पद्धति का आधार माना गया है। कायचिकित्सा के अंतर्गत चरक द्वारा हृदय को एक मुख्य अवयव माना गया है जिससे रक्त संबंधी संचार तंत्र के नियंत्रण का अनुभव हुआ। चरक द्वारा यह ज्ञात कर लिया गया था की कुछ लोग ऐसे सूक्ष्मजीवों के द्वारा होते हैं जिन्हें हम अपनी आंखों से नहीं देख सकते। काय चिकित्सा के द्वारा ज्वर, रक्तपित्त, शोष, उन्माद, कुष्ट, प्रमेह, अतिसार आदि रोगों का उपचार किया जाता है ।

शल्य चिकित्सा

शल्य चिकित्सा का इतिहास काफी पुराना है, शल्य चिकित्सा के विकास के संबंध में दिए जाने वाले तर्क इस के उद्भव एवं विकास के उद्देश्य को सार्थक सिद्ध करते हैं प्राचीन मान्यताओं के अनुसार जब दो सेनाओं के मध्य युद्ध हुआ करते थे उस दौरान घायल सैनिकों अथवा उनके क्षत-विक्षत शारीरिक अंगों को स्वस्थ करने की दृष्टि से शल्य चिकित्सा की आवश्यकता महसूस हुई अथवा शल्य चिकित्सा का आरंभ यही सही माना गया है। भारत में शल्य चिकित्सा के रूप में भारत में शल्य चिकित्सा का आरम्भ लगभग 2600 वर्ष पूर्व ही प्रचलन में आ चुकी थी जिसका समस्त विवरण महर्षि सुश्रुत द्वारा रचित ग्रन्थ सुश्रुत संहिता में विस्तारवपूर्वक वर्णित किया गया है। सुश्रुत संहिता में चाकू, चिमटे, सुईया सहित 125 से अधिक शल्य चिकित्सा हेतु आवश्यक उपकरणों तथा लगभग 300 प्रकार की सर्जरियों का उल्लेख किया गया है। सुश्रुत संहिता के अनुसार सुश्रुत द्वारा अपने साथियो सहित लगभग 3000 शल्य क्रियाएं की गयीजिसके परिणामस्वरूप सुश्रुत को भारत का पहला चिकित्सक भी माना गया है। सुश्रुत संहिता के पूर्व भाग को पांच भागो में विभाजित किया गया है इसके अतिरिक्त सुश्रुत संहिता के उत्तर भाग को 64 अध्यायों में वर्गीकृत किया गया है।

तालिका 1: सुश्रुत संहिता के पूर्व भाग के पांच अंग

1	सूत्र स्थान
2	निदान स्थान
3	शरीर स्थान
4	कल्प स्थान
5	चिकित्सा स्थान

सुश्रुत द्वारा शल्य चिकित्सा की आठ विधियों का प्रयोग किया गया है जो इस प्रकार हैं।

तालिका 2: शल्य चिकित्सा की विधियां

छेद्य	छेदन हेतु
भेद्य	भेदन हेतु
लेख्य	अलग करने हेतु
वेध्य	शारीरिक द्रव्य निकालने हेतु
ऐश्य	नाडी में घाव ढूंढने हेतु
अहार्य	हानिकारक उत्पतियो को निकालने हेतु
विश्रव्य	द्रव्य निकालने के लिए
सीव्य	घाव सिलने हेतु

सुश्रुत द्वारा प्रयोग किए जाने वाले उपकरण

सुश्रुत द्वारा सर्वप्रथम नेत्र रचना विज्ञान, नजर की कमजोरी, मोतियाबिंद की सर्जरी, कान नाक व गले से जुड़ी सभी बीमारियां, क्षतिग्रस्त नाक को फिर से ठीक करना, कान की लौ को ठीक करना, पथरी, जले घाव को ठीक करना, टूटी हड्डियों को जोड़ना, आंत्र में होने वाले छिद्रों का उपचार, प्रोस्टेट नियंत्रण के निदान से संबंधित उपकरणों को इजात किया जिन्हें शल्य चिकित्सा में काफी महत्वपूर्ण माना गया है।

चित्र 1: शल्य चिकित्सा में सुश्रुत द्वारा प्रयोग किए जाने वाले उपकरण

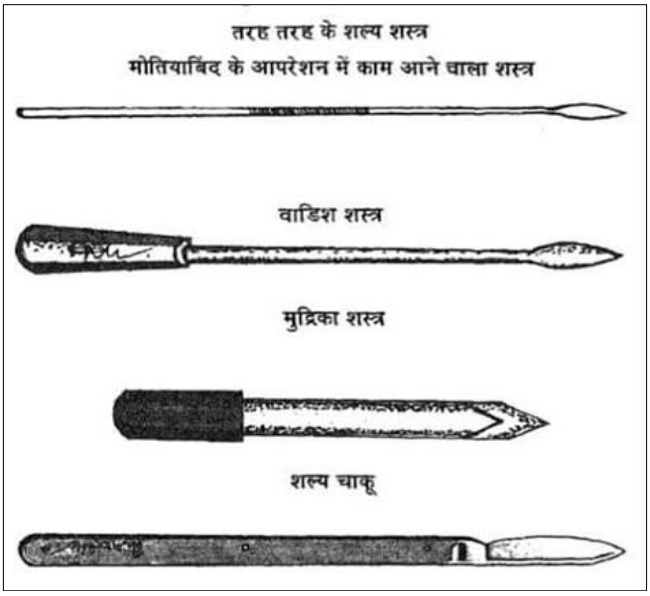

चित्र 2: मोतियाबिंद अथवा आंखों से संबंधित लोगों के उपचार में प्रयोग होने वाले उपकर

शालक्यतंत्र

इसके अंतर्गत मुख, नेत्र, नासिका तथा कर्ण संबंधित रोगों का उपचार किया जाता है। इस चिकित्सा पद्धति में गले के ऊपर के हिस्से में 'शालाका' के सामान तंत्रों का प्रयोग होने के कारण यह शालक्यतंत्र तंत्र के नाम से विख्यात है।

कुमारभृत्य

आयुर्वेद के अंतर्गत कुमार भृत्य का अहम हिस्सा है इस भाग में प्रमुख ग्रंथ काश्यप संहिता है जिसके अंतर्गत गर्भधारण, प्रसव पीड़ा, बाल रोग संबंधी उपचारों को संकलित किया गया है।

अगदतंत्र

आयुर्वेद के इस भाग के अंतर्गत खाद्य विषाक्तता, सर्पदंश, कीट दंश और स्वान दंश का वर्णन मिलता है। अतः यह प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति में विष विज्ञान के रूप में भी प्रचलित है।

भूत विद्या

इस भाग में देवाधि ग्रहों द्वारा उत्पन्न विकारों तथा संबंधित उपचारों का उल्लेख मिलता है।

रसायन तंत्र

उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु, बल आदि शारीरिक क्षमताओं के विकास तथा वृद्धावस्था में उत्पन्न विकारों के उपचार में रसायन तंत्र में उल्लेखित ज्ञान बेहद महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ है।

वाजीकरण

इसके अंतर्गत शारीरिक क्षमता का विकास करने, रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि करने तथा व्याधि रहित सामान्य स्वास्थ्य संबंधी उपचारों का उल्लेख मिलता है।

निष्कर्ष

आयुर्वेद के आठो भागो का विश्लेषण करने के उपरान्त निष्कर्ष के तौर पर यह कहा जा सकता है कि भारतीय चिकित्सा पद्धति प्राचीन काल से ही प्रचलन में थी। भारतीय चिकित्सा का स्वरूप बेहद जटिल रहा है जिसका उल्लेख अथर्ववेद में भी मिलता है। आयुर्वेद विश्व की सबसे प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति होने के साथ-साथ बहुत विकसित पद्धति भी है अतः चिकित्सा के क्षेत्र में भारतीय ऋषि मुनियों द्वारा व्यापक कार्य किए गए हैं जिनका विस्तृत विवेचन सुश्रुत और चरक के ग्रंथों में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। चरक तथा सुश्रुत द्वारा चिकित्सा के क्षेत्र में किए गए कार्य तत्कालीन वैश्विक परिप्रेक्ष्य से आधुनिक चिकित्सा प्रणाली तक बेहद कारगर साबित हुए हैं जिसका परिणाम है कि आधुनिक प्लास्टिक सर्जरी के आधारों के रूप में सुश्रुत द्वारा लिखित ग्रंथ सुश्रुत संहिता मुख्य रहा है। भारतीय आयुर्वेद मानव स्वास्थ्य की दृष्टि से मानव के शारीरिक रोगों के निदान में एक अमूल्य धरोहर के रूप में विकसित हुआ और इसकी जड़े प्राचीन काल से आधुनिक विज्ञान को प्रभावित करती रही है । अतः यहविश्व के लिए आवश्यक है कि आयुर्वेद के बहुमूल्य तत्त्वों को शामिल करते हुए अपनी राष्ट्रीय चिकित्सा प्रणाली को विकसित करे। आयुर्वेद रोग के मूल कारण पर सीधे असर करता है इसलिए यह समय की कसौटी पर खरा उतरा है ।

संदर्भ सूची

1. **वैद्य भगवान दास, कंचन गुप्ता, आयुर्वेद का सैद्धांतिक अध्ययन, पृष्ठ 25**
2. **गुणाकर मुले, प्राचीन भारत के महान वैज्ञानिक, ज्ञान विज्ञान प्रकाशन, 1989**
3. **टी एल देवराज, आयुर्वेद और स्वस्थ जीवन, 2009**
4. **अत्रिदेव, भास्कर गोविन्दजी घनेकार, लालचन्द्र जी वैद्य, सुश्रुत संहिता, 2007**
5. **योगेन्द्र कुमार त्रिपाठी, न्याय सूत्र एवम् चरक संहिता, 1987**